ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

जयपुर शैली में शाही चित्रकार साहिबराम का योगदान

Contribution of Royal Painter Sahibram In Jaipur School of Art

Paper Submission: 12/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

रीना शर्मा
शोध छात्रा,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

गुलाबी नगर के नाम से प्रसिद्ध राजस्थान राज्य की राजधानी जयपुर अपने नगर नियोजन,वास्तु–सज्जा, पर्यटन तथा सांस्कृतिक और कलात्मक विरासत के लिए विश्व प्रसिद्ध है। ललित कला प्रेम की धारा सदा ही यहाँ के कच्छवाहा राजघरानें में प्रवाहित होती रही है। कच्छवाहा राजपूतों की यह रियासत सदैव कला संस्कृति का केन्द्र रही और आज भी राजस्थान के सांस्कृतिक वैभव की प्रतिनिधि परिचायक है।

अन्य राजपूत राज्यों की तरह जयपुर राज्य भी प्राचीनकाल में राजपूताना की एक रियासत था। जयपुर के आस पास का क्षेत्र प्राचीन काल में जयपुर राज्य का ही एक भाग रहा है। आमेर कच्छवाहों का यह गौरवमय राज्य मध्यकाल में 'ढूंढाड़' प्रदेश के नाम से जाना जाता था। इस भू–भाग में अनेक प्राचीन सभ्यताऐं पल्लवित एवं पुष्पित हुई। पाषाणकाल में यहाँ मानव संस्कृति के विद्यमान होने के प्रमाण पुरातात्विक शोध से प्राप्त हुए है। यहाँ से प्राप्त विभिन्न कालान्तरों के अस्थि–पंजर, कंकाल, प्रस्तर–औजारों, हड्डियों, मृदभाण्डों, ताम्र उपकरणों, मुद्राओं, आभूषणों, अभिलेखों, कलात्मक अवशेषों एवं नगरीय खण्डहरों से इस अवधारणा की पुष्टि हो जाती है कि प्रारम्भ से ही यह क्षेत्र मानव संस्कृति एवं कला का गढ़ रहा है।[1]

Jaipur, the capital of Rajasthan state, known as Gulabi Nagar, is world famous for its town planning, architecture, tourism and cultural and artistic heritage. The stream of fine art love has always flowed in the Kachhwaha royal houses here. This princely state of Kachhwaha Rajputs has always been the center of art culture and is still representative of the cultural splendor of Rajasthan.

Like other Rajput states, Jaipur state was a princely state of Rajputana in ancient times. The area around Jaipur has been a part of the Jaipur state in ancient times. This glorious state of the Amer Kachchwahas was known as the 'Dhundhar' region in the medieval period. Many ancient civilizations flourished and flowered in this land. Evidence of the existence of human culture here in the Stone Age has been obtained from archaeological research. The concept of bones, skeletons, stone-tools, bones, pottery, copper tools, postures, jewelery, inscriptions, artistic remains and urban ruins of various periods attained here confirms the fact that this area was human culture from the very beginning. And there has been a stronghold of art. [1]

मुख्य शब्द : पाण्डुलिपि, वसली, वार्निश, चन्दरस, म्यूरल, चितेरा ।
Manuscript, Vasali, Varnish, Chandras, Mural, Chitera.

प्रस्तावना

मध्यकाल में पंजाब, गुजरात, और गंगा की घाटियों से विस्थापित होकर अनेक राजपूत वंश राजस्थान आये और इस प्रदेश के विभिन्न भागों पर अपना शासन स्थापित कर लिया। इनमें नरवर शाखा के कच्छवाहा राजपूत सर्वप्रमुख थे। 10 वीं –11 वीं शताब्दीं में नरवर के कच्छवाहा राजघराने के वंशज दूल्हाराय ने बडगुर्जरों एवं मीणों को हराकर ढूंढाड़ प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया।[2] इनके पुत्र काकिलदेव (1036–1039 ई.) ने सुसावत मीणों के मुखिया भत्तों को हराकर जयपुर से आठ किलोमीटर उत्तर की ओर आमेर को अपनी नयी राजधानी बनाया,[3] जो लगभग सात सौ वर्षों तक कच्छवाहों की राजधानी रही। कच्छवाहा नरेश सभी प्रकार की ललित कलाओं एवं साहित्य में पर्याप्त रूचि लेते थे। अपनी कलात्मक अभिरूचि के कारण इन शासकों ने यहाँ कला और साहित्य

को सृजनात्मक गति प्रदान की। 16 वीं शताब्दी में कच्छवाहा नरेश भारमल ने मुगलों के साथ सम्बन्ध स्थापित करके[4] आमेर को और अधिक सुढृढ़ बनाया तथा उनके वंशजों ने विद्वानों,कलाकारों एवं साहित्यकारों को उदारता से आर्थिक सहायता व संरक्षण देकर अपने राज्य की सांस्कृतिक उन्नति में योगदान दिया। परिणामस्वरूप कला और संस्कृति की समृद्ध परम्परा यहाँ के राजघराने में विकसित हुई। चित्रकला को भी पूर्ण संरक्षण एवं राज्याश्रय यहाँ प्राप्त हुआ जिसके कारण 16 वीं – 17 वीं शताब्दीं में आमेर,जयपुर चित्रकला का तत्कालीन केन्द्र बन गया। वस्तुतः जयपुर शैली का प्रारम्भिक स्वरूप 'ढूढांड़ शैली' 'कच्छवाहा शैली' या 'आमेर शैली' के नाम से भी जाना जाता है। आमेर के सुन्दर चित्रित महल, छतरियाँ, हवेलियाँ, मन्दिर, किले तथा सैंकडों सचित्र पाण्डुलिपियाँ आदि आमेर नरेशों के कलात्मक प्रेम के उदाहरण है,जिनके सौन्दर्य एवं कलात्मक वैशिष्ट्य के कारण जयपुर की चित्रकला भारत मे नहीं,अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपना अद्वितीय स्थान रखती है।

1727 ई. महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय (1699–1743 ई.) द्वारा आमेर से कुछ दूर दक्षिण की ओर जयपुर नगर बसाने के बाद कच्छवाहा शासकों की राजधानी आमेर से जयपुर हस्तान्तरित हुई।[5] अपनी नयी राजधानी में सवाई जयसिंह ने विभिन्न कलाओं के प्रत्येक रूप को संरक्षण दिया और उनके उत्थान में विशेष योगदान दिया । परिणाम स्वरूप आमेर शैली नवीन नगर एवं नवीन परिवेश में नवीन नाम 'जयपुर शैली' के रूप में मुखरित हुई। जयपुर राजघराने की कलाप्रियता के कारण यहाँ का वातावरण कलाकारों के लिए सदैव अनुकूल बना रहा। ज्योतिषविद्, भाषाविद्, पण्डित, कवि, चित्रकार, शिल्पकार, संगीतज्ञ, विद्वान आदि राजघराने में स्नेहाश्रय पाते रहे। कलाकारों को प्रत्येक स्तर पर राज्य से निरन्तर प्रोत्साहन प्राप्त होता था। राजदरबार ने कलाकारों को सामाजिक व आर्थिक संरक्षण प्रदान किया और कलाकारों ने निर्मल उन्मुक्त मन से कला साधना कर जयपुर के कलात्मक स्वरूप को उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर स्थापित कर दिया।

मुगलों से घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण जयपुर नरेशों ने मुगल दरबार के परिष्कृत तौर–तरीके अपनाये साथ ही अपनी परम्पराओं को भी संजोये रखा। फलतः दो कलाओं के मिलने से एक उच्च संयुक्त संस्कृति का प्रार्दुभाव हुआ।

मुगलों ने राजकीय साज–सामान को संरक्षित करने एवं कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए अपने साम्राज्य को अनेकों विभागों अथवा कारखानों में बांट रखा था।[6] मुगलों की इसी पद्धति का अनुसरण करते हुए महाराजा सवाई जयसिंह ने भी जयपुर राज्य की कलात्मक धरोहर को संरक्षित करने हेतु जयपुर में 36 कारखानों की स्थापना की।[7] ये कारखाने या विभाग अपने नाम से ही, अपने कार्यक्षेत्र का बोध कराते थे। जैसे 'गुणीजन खाना' संगीत विभाग, 'पोथीखाना' पुस्तकों के रख–रखाव संबंधी विभाग, 'सूरतखाना' चित्रकला संबंधी विभाग तथा 'जवाहरखाना' आभूषणों का विभाग था। 'तोपाखाना', 'रंगखाना' तथा 'छापाखाना' वस्त्र विभाग के अन्तर्गत आते थे। इनमें 'सूरतखाना' उस कारखाने अथवा विभाग का नाम था, जहाँ चित्रों का निर्माण व रख रखाव किया जाता था।[8] यहाँ दरबारी चित्रकार नियुक्त किये जाते थे, जो राजा की आज्ञानुसार नये चित्रों का निर्माण करते थें।

प्रारम्भ में सूरतखाना पोथीखाना का ही भाग था। सूरतखाने में एक दरोगा (विभाग का प्रबंधक), एक तहवीलदार (स्टोर का रखवाला), एक मुशर्रफ (लेखाकार) तथा कुछ सरबराहकार (नौकर) थे।[9] ये सरबराहकार कलाकारों के सहायक के रूप में कार्य करते थे। जैसे – रंग व स्याही बनाना ,वसली बनाना, खाका तैयार करना, पुस्तकों एवं चित्रों का रखरखाव आदि। चित्रकारों को कला सामग्री जैसे – मानसिंह, सियालकोटी, दुमोहर्या, दौलताबादी, गुजराती तथा सवाई जयपुरी आदि कीमती कागज, सोने –चांदी के पतरे, रंग, अस्तर के लिए कपडा, चित्र को मढ़ने के लिए कपड़ा, ब्रुश आदि सामान शासन द्वारा उपलब्ध कराये जाते थे।[10] साथ ही कलाकारों को उनकी श्रेष्ठ कलाकृतियों के लिए राज्य द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत भी किया जाता था। राज्य अभिलेखागार बीकानेर के रिकार्ड के अनुसार संवत् 1858/1801 ई. के फाल्गुन महिने के ग्याहरवें दिन हुकमा, घासी, लक्ष्मण, गोपाल, राधाकिशन, दुर्गा, लेखमा, हरिजी, गोपाल छोटा ने महाराजा को रामायण से संबधित चित्र भेंट किये, जिनके लिए उन्हें पुरस्कृत किया गया।[11] विभिन्न कच्छवाहा नरेंशों के सान्निध्य में अनेक कलाकारों ने सूरतखाने में कार्य किया जिनमें साहिबराम, रामजीदास, लालचितेरा, पोहकर, खुशाला, सालिगराम, हुकमा, त्रिलोका, सीताराम, घासीराम, रामसेवक, भवानीराम, गोविन्दा आदि प्रमुख है। 'साहिबराम' जयपुर दरबार का सबसे कुशल और वरिष्ठ चित्रकार था, जिसने महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय के शासनकाल के अन्तिम वर्षों से लेकर उनके उत्तराधिकारियों सवाई ईश्वरीसिंह, सवाई माधोसिंह प्रथम, सवाई पृथ्वीसिंह, सवाई प्रतापसिंह, सवाई जगतसिंह एवं सवाई जयसिंह तृतीय के काल तक कार्य किया और जयपुर शैली को नयी पहचान दिलाई।

साहिबराम कौन था ? उसके जीवन और शाही दरबार में उसके कार्यकाल के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है।अभिलेखीय प्रमाणों में वह 'साहिबराम बेटा धर्मू का चितेरा' के नाम से उल्लेखित है।[12] संभवतः उसका पिता धर्मू भी चित्रकार रहा होगा। साहिबराम महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय के शासनकाल के अन्तिम वर्षों में व्यक्ति चित्रण की शुरूआत करने वाला प्रमुख कलाकार था। उसके प्रारम्भिक हस्ताक्षरयुक्त चित्र 1750 ई. के लगभग प्राप्त होते है तथा इसके बाद महाराजा सवाई जगतसिंह व सवाई जयसिंह तृतीय के शासनकाल तक वह चित्रण करता रहा। इस दृष्टि से वह लगभग 85 से 90 वर्ष की आयु तक चित्र बनाता रहा होगा।[13] 1758–59 ई. तक वह सूरतखाने का प्रसिद्ध चित्रकार बन चुका था तथा अनेक चित्रकार उसके निर्देशन में कार्य कर रहे थे।[14]

साहिबराम ने कच्छवाहा शासकों के आदमकद व्यक्तिचित्र बनाने की नयी परम्परा विकसित की, जिसने जयपुर चित्रण– परम्परा को भारतीय कला परिदृश्य में

मौलिक पहचान दिलायी। ये चित्र विशेष शैली में निर्मित किये गये, जिनमें प्रमुख ध्यान व आकर्षण शासकों की वेशभूषा, आभूषण व शारीरिक हाव–भाव पर थे। शासकों के स्वभाव एवं चरित्र पर ध्यान देकर उनकी भाव भंगिमाओं और नाक–नक्ष को यथार्थ रूप में चित्रित करने में वह सिद्धहस्त थे। इस शाही चित्रकार ने जयपुर के महाराजाओं के अनेकों चित्र सूती कपडे पर बनायें।

महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह के काल (1743–1750 ई.) में उसने कपडे पर चन्दरस(लाख) का प्रयोग करके आदमकद व्यक्ति चित्र बनाये।[15] महाराजा सवाई जयसिंह के मरणोपरान्त उनके आदर्श रूप की कल्पना करके आलंकारिक विधि से उनका छवि चित्र बनाया।

महाराजा सवाई माधोसिंह के काल (1750–1767 ई.) में साहिबराम सूरतखाने का सर्वप्रमुख चित्रकार बन गया। इस काल में उसने चित्रों में में आभूषणों के स्थान पर समान आकार व प्रकार के लकड़ी के टुकड़े चिपकाकर व उन्हें रंगकर अपनी कला में नवीन प्रयोग किये।[16] इससे ऐसा लगता मानो वास्तविक आभूषण हो।

महाराजा सवाई माधोसिंह व सवाई पृथ्वीसिंह के शासनकाल में में साहिबराम की गिनती दरबार के वरिष्ठ चित्रकारों में होने लगी। सवाई पृथ्वीसिंह की अल्पायु में मृत्यु हो जाने के बाद उनके छोटे भाई महाराजा सवाई प्रतापसिंह (1779–1803 ई.) ने राज्य की बागडोर संभाली। प्रतापसिंह के कलानुराग के कारण जयपुर शैली इस काल में अपने चरम पर पहुँच गयी। इन्होनें चित्रकारों को चित्रण की स्वतन्त्रता दी और उन्हे खूब सराहा तथा पुरस्कार दिये। इन्होने सूरतखाने को व्यवस्थित रूप दिया और वहाँ हजारों चित्रों के एल्बम तैयार करवाये। इनके समय में सूरतखाने में 51 चित्रकार कार्यरत थे, जिन्हें वे 'बाईसी' कहते थे।[17] साहिबराम ने अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ चित्रों का निर्माण इन्हीं के शासनकाल में किया। उसने सवाई प्रतापसिंह के भी अनेक रंगीन चित्र बनाये,जिनमें उसने महाराजा की आत्मा व व्यक्तित्व को छूने की चेष्टा की है।

साहिबराम द्वारा चित्रित जयपुर के महाराजाओं के अनेकों आदमकद चित्र महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर के हॉल में प्रदर्शित है। ये सभी चित्र हस्ताक्षर युक्त है, जो निम्न है–

AG – 1402, **'महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय का आदमकद व्यक्तिचित्र'** (1745–50 ई.)

जयपुर नगर के संस्थापक सवाई जयसिंह द्वितीय का यह प्रभामण्डलयुक्त आदमकद चित्र संभवतः उनकी मृत्यु से कुछ समय पूर्व का है।सूती कपडे पर चन्दरस(लाख) से निर्मित इस चित्र में शासक को स्लेटी रंग का बूटीदार जामा पहने सीमित आभूषणों में चित्रित किया गया है। पृष्ठभूमि में साधारण सफेद वास्तु का अंकन है। मुखाकृति सजीव एवं लाक्षणिक है। (चित्र संख्या 1)

AG- 1403, 'महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह का व्यक्तिचित्र' (1743–1750 ई.)

आकार – आदमकद

माध्यम – सूती कपडे पर टेम्परा एवं सुनहरी वार्निश

AG – 1404, 'महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम का व्यक्तिचित्र' (1750–67 ई.)

आकार – आदमकद

माध्यम – सूती कपडे पर टेम्परा रंगो के साथ लकडी के टुकडें व सुनहरे रंगो का प्रयोग

AG – 1405, 'महाराजा सवाई प्रतापसिंह का व्यक्तिचित्र' (1793 ई.)

सूती कपडे पर टेम्परा रंगो से निर्मित सवाई प्रतापसिंह का यह मानवाकार चित्र आकृति निर्माण के परम्परागत नियमों का पालन करते हुए बनाया गया है। सुनहरी बॉर्डरयुक्त सफेद पारदर्शी जामा की एक एक सलवट को कलाकार ने बडी बारीकी से चित्रित किया है। सरपेचयुक्त सुनहरी पगड़ी, मोती, पन्ने और रूबी की मालाऐं तथा कानों में कुण्डल पहने एक हाथ में फूल पकड़े हुए प्रतापसिंह की यह आकृति जयपुर रौली के सर्वश्रेष्ठ चित्रों में से एक है। वीरोचित गुणों से अधिक भावयुक्त मुखमण्डल चित्रित है। (चित्र संख्या 2)

AG – 1407 , 'महाराजा सवाई प्रतापसिंह का आवक्ष व्यक्तिचित्र' (1794 ई.)

माध्यम – सूती कपडे पर टेम्परा माध्यम के साथ लकडी के टुकडों का प्रयोग

AG – 1323, ' विदेशी ' (1750–1800 ई.)

AG – 1382, ' राससमण्डल ' (1790–1810 ई.)

सवाई प्रतापसिंह के काल में चित्रित राधाकृष्ण के अलौकिक प्रतीकात्मक नृत्य का यह चित्र उच्च कोटि का है। केन्द्र में प्रेमविभोर राधा कृष्ण को दो वर्गाकार मण्डलों में नायिकाऐं घेरे नृत्य कर रही है। बाहरी घेरे की स्त्रियाँ वाद्ययंत्र बजा रही है। ऊपर की ओर देवतागण भगवान के इस अलौकिक दृश्य को निहारते हुए पुष्पवर्षा कर रहे है। सम्पूर्ण दृश्य गतिमान है तथा अलौकिकता प्रस्तुत करता है। साहिबराम के सशक्त रेखांकन व संयोजन का यह उत्कृष्ट उदाहरण है।[18]

AG – 1408, 'महाराजा सवाई जगतसिंह का व्यक्तिचित्र' (1803–18 ई.)

साहिबराम की इस कृति में महाराजा सवाई जगतसिंह को सूती कपडे पर खनिज व स्वर्णिम रंगों के प्रयोग से सुनहरी बोर्डर युक्त सफेद पारदर्शी जामा पहने व लाल दुपट्टा लिये हुए चित्रित किया गया है। राजा मोतियों से सुसज्जित सरपेचयुक्त लाल सुनहरी पगड़ी, गले में मोतियों व मणियों की मालाऐं, कान व हाथों में आभूषण पहने तथा एक हाथ में माला व दूसरे हाथ में तलवार पकडे दृढ़तापूर्वक खड़े चित्रित किया है। फर्श पर फूलों से युक्त सुन्दर कालीन, नक्काशीदार स्तम्भ, जालीदार दीवार के पीछे फूलों की क्यारी तथा नीला आसमान चित्र में राजसी वैभव को दर्शाते है। आभायुक्त मुखमण्डल व हाथों के निरूपण में प्रदर्शित भाव भंगिमाऐं स्वाभाविक लक्षणों से युक्त है। (चित्र संख्या 3)

AG – 1409, 'महाराजा सवाई जयसिंह तृतीय का व्यक्तिचित्र' (1818–1834 ई.)

AG – 1410, 'महाराजा सवाई जयसिंह तृतीय का आवक्ष व्यक्तिचित्र' (1820 ई.)

स्वर्गीय कुँवर संग्रामसिंह संग्रहालय नवलगढ़ में साहिबराम द्वारा चित्रित दो चित्र संग्रहित है–

N – 27, 'महाराजा सवाई पृथ्वीसिंह का व्यक्तिचित्र'[19] (1768–1770 ई.)

'सबी साहिबराम चितेरा बनाई '

आकार – 23.3 x 25.4 सेमी.

इसमें हल्की हरी पृष्ठभूमि में सफेद जामा पहने युवराज पृथ्वीसिंह (1767–1778 ई.) खडे चित्रित है।

N – 132, 'साहिबराम का आत्म चित्र(रेखाचित्र)'[20] (1750 ई)

आकार – 7.6 x 10.2 सेमी.

रेखाचित्र में युवा चित्रकार पैरो को मोड़कर बैठे हुए तख्त पर चित्रण कार्य करते हुए अंकित है। साधारण पगड़ी, तावदार मूँछे तथा ललाट पर वैष्णव चिन्ह अंकित है। सशक्त रेखांकन व लोचपूर्ण मुद्राऐं साहिबराम की उत्कृष्ट कार्यशैली का बोध कराती है।

20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में डॉ. आनन्द कुमार स्वामी ने राजपूत शैली के सैकड़ों चित्र इकट्ठे किये जिनमें से अनेक चित्र साहिबराम की चित्रशैली का प्रतिनिधित्व करते है। वर्तमान में ऐसे चित्र देश–विदेश के विभिन्न संग्रहालयों एवं निजी संग्रहों में देखे जा सकते है। इन चित्रों में साहिबराम की शैली व रेखांकन की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है।

कुछ प्रसिद्ध चित्र निम्न है–

'साहिबराम का व्यक्तिचित्र' (1790–1810 ई.)

आकार– 12.2 X 8.8 सेमी.

माध्यम– कागज पर स्याही

A.N. – 17.2992 ,

'म्यूजियम ऑफ फाईन आर्ट, बोस्टन

रेखाचित्र में लकडी के तख्त पर रेखाकंन करते हुए चित्रकार साहिबराम को दर्शाया गया है। नीचे नागरी लिपि लिखा है– 'साहीबराम चितेरो'। (चित्र संख्या 4)

'नृत्यागंना' (1780–1820 ई.)

आकार– 132.1 X 94 सेमी.

A.N. – 17.3081 , 'म्यूजियम ऑफ फाईन आर्ट, बोस्टन

'कृष्ण का आवक्ष चित्र' (1800 ई.) (चित्र संख्या 5)

आकार– 69.2 X 47 सेमी.

माध्यम– कागज पर स्याही और टेम्परा

A.N. – 18.85.2 , 'द मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम, न्यूयार्क

'गायिका और सारंगी वादिका' (1800 ई.) (चित्र संख्या 6)

आकार– 66 X 46.4 सेमी.

माध्यम– कागज पर स्याही

A.N. – 18.85.4 , 'द मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम, न्यूयार्क

उपर्युक्त दोनों विशाल कार्टून (चित्र संख्या 5 व 6) आनन्द कुमार स्वामी ने साहिबराम के उत्तराधिकारियों से प्राप्त किये थे।[21] संभवतः ये कार्टून रासलीला के म्यूरल के लिए चित्रित किये गये थे। इनके अतिरिक्त अनेक ऐसे हस्ताक्षररहित चित्र उपलब्ध है जो साहिबराम की शैली से पूर्ण साम्यता रखते है। ये चित्र संभवतः साहिबराम या उनके निर्देशन में कार्य कर रहे अधीनस्थ कलाकारों द्वारा पूर्ण किये गये होगें। इन चित्रों में साहसी रेखांकन प्रमाणयुक्त आकार व लाइन पर पकड़ सुस्पष्ट है। ऐसे चित्रों के कुछ उदाहरण निम्न है–

'महाराजा सवाई प्रताप सिंह के दो व्यक्तिचित्र' (1790 ई.) (चित्र संख्या 7)

आकार– 72.3 X 58.7 सेमी.

माध्यम– कागज पर स्याही

A.N. – LI 118.43

जमील स्टडी सेन्टर, द एश्मोलियन म्यूजियम ऑक्सफोर्ड

'महिला का व्यक्तिचित्र' (1800 ई.) (चित्र संख्या 8)

आकार– 29.2 X 20.8 सेमी.

माध्यम– कागज पर खनिज एवं स्वर्णिम रंग

A.N. – EA 1967.162

जमील स्टडी सेन्टर, द एश्मोलियन म्यूजियम ऑक्सफोर्ड

'महाराजा सवाई प्रताप सिंह शाही हरम की महिलाओं के साथ' (1780–1800 ई.) (चित्र संख्या 9)

आकार– 46.4 X 44.5 सेमी.

माध्यम– कागज पर टेम्परा के साथ रजत व स्वर्ण रंग

A.N. –51997.70

फ्रियर गैलरी ऑफ आर्ट, वाशिंगटन, डी.सी.

'महाराजा सवाई प्रताप सिंह का आवक्ष व्यक्तिचित्र' (1800 ई.) (चित्र संख्या 10)

आकार– 28.5 X 20.5 सेमी.

A.N. – 17.2934

म्यूजियम ऑफ फाईन आर्ट, बोस्टन

साहिबराम एक प्रतिभा सम्पन्न कलाकार था और व्यक्तिचित्रण में उसकी अच्छी पकड़ थी। मध्यकाल में लघुचित्रण परम्परा में राजाओं के आदमकद व्यक्तिचित्र बनाने की परम्परा उसी ने प्रारम्भ की जो जयपुर शैली की मौलिक पहचान बनी । सवाई माधोसिंह प्रथम काल तक वह सूरतखाने का वरिष्ठ चित्रकार बन गया। उसके उत्कृष्ट कार्यो के लिए शासको द्वारा समय–समय पर उसे सम्मान और प्रोत्साहन दिया गया। सूरतखाने के थोक चितेरा नामक अभिलेखीय प्रमाणों के अनुसार मिति ज्येष्ठ सुदी 5 संवत् 1820 (1763 ई.) को साहिबराम बेटा धर्मू का चितेरा की तनख्वाह में पाँच रूपये बारह आने की वृद्धि की गई और उसके अधीन कार्य करने के लिए अन्य कलाकारों की नियुक्ति का आदेश हुआ।[22] ये कलाकार साहिबराम के सहायक के रूप में चित्रों में रंग भरना, वसली बनाना, खाका तैयार करना आदि कार्य करने के लिए नियुक्त हुए। अशोक कुमार दास ने साहिबराम के निर्देशन में कार्य करने वाले कुछ कलाकारों के नाम दिये है– रामजी, सीताराम, राधाकृष्ण, रामकृष्ण, गोपाल, उदय, हुकमा, घासी, सालिगराम, रामसेवक, जीवन, चिमन, हीरा, फैजुला, खुशाला, केशव, गोविन्द, साँवला आदि।[23]

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर के रिकार्ड बताते हैं कि आषाढ सुदी 10, संवत् 1846 (1789 ई.) को साहिबराम बेटा धर्मू का चितेरा व रामजीदास बेटा देवा का कलाकार को सवाई जयपुर परगना के पास आमेर कस्बें में 50 बीघा जमीन जो 100 रूपये प्रतिमास की फसल देती थी, इनाम स्वरूप दी गई।[24]

साहिबराम ने सौ से भी अधिक चित्रों व रेखाचित्रों का निर्माण किया, जिनका रिकार्ड अभिलेखीय प्रमाणों में उपलब्ध है। लगभग 1750 ई. से 1800 ई. के बीच वह सर्वाधिक सक्रिय रहा। उसे चित्रकला के सभी क्षेत्रों –रेखाकंन,रंगों का प्रयोग, छवि–चित्रकारी, भू–दृश्य

के चित्रण में महारत हासिल थी। वह विशाल आकार संयोजन की खोज, साहसी रेखांकन,सूफियाना रंगो की गहराई व प्रचुरता, आभूषणों में मोती, लाख, मणिये व लकडी के टुकडों के आलंकारिक प्रयोग व उनसे भी बढकर तीव्र निरीक्षण तथा संवेदनशील और मर्मस्पर्शी चित्रांकन के लिए विख्यात था।

अध्ययन का उददेश्य

प्रस्तुत शोध–पत्र का उददेश्य जयपुर चित्रण–परम्परा में दरबारी चित्रकार साहिबराम के योगदान को प्रतिपादित करना है, जिसने कच्छवाहा शासकों के आदमकद व्यक्तिचित्र बनाने की नयी परम्परा विकसित कर जयपुर शैली को भारतीय कला परिदृश्य में मौलिक पहचान दिलायी।

निष्कर्ष

आज साहिबराम के हस्ताक्षरयुक्त रंगीन चित्र बहुत कम संख्या में उपलब्ध है, जिससे उसकी चित्रण शैली का विस्तृत अध्ययन कर पाना मुश्किल है। तथापि जो भी कृतियाँ बची है, वे उसकी प्रतिष्ठा को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *सिंहदेव, पुष्यमित्र : जयपुर का इतिहास एवं पुरातत्व, रा.हि.ग्र.अ., जयपुर, 2014,पृ.सं.– 2–6*
2. *मंडावा , देवीसिंहः कच्छवाहों का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2008, पृ. सं.– 14*
3. *Gupta, T.N. , Khangarot R.S. : Amber Jaipur A Dream In Desert, Classic Publishing House, Jaipur, 1994, P.No.- 37*
4. *सिंह, चन्द्रमणी : जयपुर राज्य का इतिहास, राजस्थान ग्रंथागार, जोधपुर, 2008, पृ.सं. – 14*
5. *नाटाणी, सियाशरण : जयपुर राजघराने की अमूल्य विरासत सवाई जयपुर, पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर , 2010, पृ.सं – 24*
6. *Sarkar, Jadunath: Mughal Administration, Culcutta, 1920, P.No. – 14*
7. *Bahura, Gopal Narayan: Literary Heritage of The Rulers Of Amber And Jaipur, Jaipur, 1976, P.No. – 13*
8. *Bahura, Gopal Narayan: Literary Heritage Of The Rulers Of Amber And Jaipur, Jaipur ,1976, P.No. - 16*
9. *Bahura , Gopal Narayan : Literary Heritage Of The Rulers Of Amber And Jaipur, Jaipur ,1976, P.No. - 16*
10. *पाण्डेय, रजनी : जयपुर की चित्रकला में संगीत वाद्य यंत्र, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर, 2011, पृ.सं. – 54*
11. *प्रताप, रीता : जयुपर की चित्रांकन परम्परा, रा.हि.ग्र. अ., जयपुर, 2011, पृ.सं.– 226*
12. *राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर में संग्रहित सूरतखाने के थोक चितेरा पृष्टों का अभिलेखीय प्रमाण मिति ज्येष्ठ सुदी 5, संवत् 1820/1763 ई.।*
13. *Aitken, Molly Emma: Sahibram, Www.Academia.Edu,P.No. – 624*
14. *प्रताप रीता : जयपुर की चित्राकंन परम्परा, रा.हि.ग्र.अ. जयपुर, 2011, पृ.सं. –229, ; अभिलेखीय प्रमाण संवत् 1815/1758 से संवत् 1816/1759 ई. बताते है कि सरकार ने 30.8 आने प्रतिमाह पर सूरतखाने में साहिबराम के नीचे , तीन कलाकार (नौकर) रखने का आदेश दिया। ये कलाकार साहिबराम के सहायक के रूप में कार्य करेंगें। जैसे – रंग भरना, वसली निर्माण, खाका तैयार करना आदि ।*
15. *Pratap, Rita : The Panorama of Jaipur Paintings, New Delhi, 1996, P.No. – 183*
16. *Pratap, Rita : The Panorama Of Jaipur Paintings, New Delhi, 1996, P.No. – 183*
17. *पाण्डेय, रजनी : जयपुर की चित्रकला में संगीत वाद्य यंत्र, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर, 2011, पृ.सं. – 50*
18. *Mehta, N.C. : Studies In Indian Painting, Bombay,1926, P.NO – 32-33*
19. *प्रताप, रीता : जयुपर की चित्रांकन परम्परा, रा.हि.ग्र. अ., जयपुर, 2011, पृ.सं.– 228*
20. *Aitken, Molly Emma: Sahibram, Www.Academia.Edu, P.No. – 624,639*
21. *प्रताप, रीता : जयुपर की चित्रांकन परम्परा, रा.हि.ग्र. अ., जयपुर, 2011, पृ.सं.– 228*
22. *Pratap, Rita: The Panorama Of Jaipur Paintings, New Delhi, 1996, P.No. – 184*
23. *Das,Ashok Kumar : "Miniatures" Marg 30/4(1977 B), P.No.- 93*
24. *Pratap, Rita: The Panorama Of Jaipur Paintings, New Delhi, 1996, P.No. – 209*

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शर्मा, गोपीनाथ : राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, रा.हि.ग्र.अ., जयपुर, 1989।*
2. *प्रताप, रीता : जयपुर की चित्रांकन परम्परा, रा.हि.ग्र. अ., जयपुर, 2011।*
3. *प्रताप, रीता : भारतीय चित्रकला एवं मुर्तिकला का इतिहास, रा.हि.ग्र.अ., जयपुर, 2013।*
4. *शर्मा, अश्विनी, शर्मा, सुनीता : जयपुर शैली के तिथियुक्त चित्र, आगरा, 2009।*
5. *गोस्वामी, प्रेमचन्द : भारतीय कला के विविध स्वरुप, पंचषील प्रकाषन, जयपुर, 1997।*
6. *ओझा, मधुसूदन : मत्स्य देष का इतिहास, जयपुर।*
7. *कलिंगवुड, आर. जी. : कला के सिद्धान्त, रा.हि.ग्र.अ., जयुपर, 1978।*
8. *गुप्त, मोहनलाल : गुलाबी नगर की गुलाबी यादें, विजयवर्गीय प्रकाषन, जयपुर, 1972।*
9. *गोस्वामी, प्रेमचन्द : राजस्थान की लघुचित्र शैलियाँ, रा.ल.क.अ., जयपुर, 1972।*
10. *दीक्षित प्रदीपकुमार : नायक–नायिका भेद एवं राग–रागिनीयों का वर्गीकरण।*
11. *नीरज जयसिंह : राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्ण काव्य, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली, 1976।*
12. *भटनागर वी.स. : सवाई जयसिंह, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1972।*
13. *मण्डावा कु. देवी सिंह : राजस्थान के कच्छवाह, श्री राजपूत सभा, जयपुर, 1985।*
14. *राघव, रांगेय : प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास।*
15. *शर्मा महेन्द्र : जयपुर कला और कलाकार, राजस्थान ललितकला अकादमी, जयपुर, 1978।*

16. *संखलकर र.वि. : आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।*
17. *विजयवर्गीय रामगोपाल : राजस्थान की चित्रकला, कला मन्दिर, जयपुर, 1933।*
18. *बी.एल.शर्मा : राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, रा. हि.ग्र.अ., जयपुर, 1989।*
19. *राम पांडे : राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, जयपुर, 2000।*
20. *रामगोपाल विजयवर्गीय : राजस्थानी चित्रकला, जयपुर, 1953।*
21. *राधाकृष्ण वषिष्ठ : मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा, जयपुर, 1984।*
22. *रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला का इतिहास, जयपुर, 2008।*
23. *सुमहेन्द्र : राजस्थानी रागमाला चित्र परम्परा, जयपुर, 1990।*
24. *वषिष्ठ, राधाकृष्ण : मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा।*
25. *नाठंला, झूंथालाल : ढूंढ़ाड : संस्कृति और परम्परा, जनपदीय अनुसंधान परिषद्, जयपुर, 1971।*
26. *कुलश्रेष्ठ, ब्रजेश : राजस्थानी लघु चित्रकला–विषयवस्तु और रुपांकन (राजस्थान की लघु चित्रषैलियाँ), जयपुर, 1972*
27. *डॉ. चतुर्वेदी, ममता : सौन्दर्यषास्त्र, रा.हि.ग्र.अ. जयपुर, 2014*
28. *Asopa, J.N.: Cultural Heritage of Jaipur, Jaipur,1979*
29. *Pratap, Rita : The Panorama Of Jaipur Painting, Delhi,1985*
30. *Singh, Sangram : Dhundar Paintings,Jaipur,1969*
31. *Sharma,Sita : Krishna Leela Theme In Rajasthani Miniature,Meerut,1987*
32. *Behura, Gopal Narayan : The Literary Heritage Of The Ruler Of Amber And Jaipur,Jaipur,1976*
33. *Behura, Gopal Narayan : Catalogue Of Manuscripts In The Maharaja Of Jaipur Museum,Jaipur,1971*
34. *Champavat, Fateh Singh : Brief Study Of Jaipur*
35. *Dhama, B.L. : Jaipur And Amber, Jaipur,1956*

चित्र संख्या 1 'महाराजा सवाई जयसिंह का व्यक्तिचित्र'
(1745–50 ई.)
आकार – आदमकद
माध्यम – सूती कपडे पर चन्दरस(लाख) से निर्मित
संग्रह – AG – 1402, महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर

चित्र संख्या 2 'महाराजा सवाई प्रतापसिंह का व्यक्तिचित्र'
(1793 ई.)
आकार – आदमकद
माध्यम – सूती कपडे पर टेम्परा
संग्रह – AG – 1405, महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर

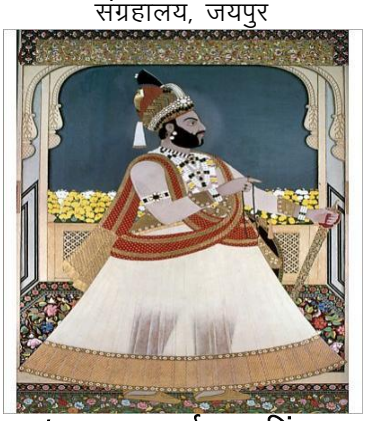

चित्र संख्या 3 'महाराजा सवाई जगतसिंह का व्यक्तिचित्र'
(1803–18 ई.)
आकार – आदमकद
माध्यम – सूती कपडे पर खनिज व स्वर्णिम रंग
संग्रह – AG – 1408, महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर

चित्र संख्या 4 'साहिबराम का व्यक्तिचित्र'
(1790–1810 ई.)
आकार – 12.2 X 8.8 सेमी.

माध्यम – कागज पर स्याही
संग्रह – A.N. – 17.2992 , 'म्यूजियम ऑफ फाईन आर्ट, बोस्टन

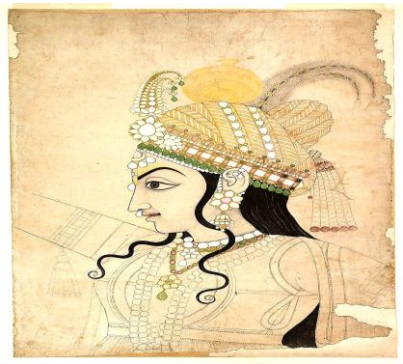

चित्र संख्या 5 'कृष्ण का आवक्ष चित्र' (1800 ई.)
आकार – 69.2 X 47 सेमी.
माध्यम – कागज पर स्याही और टेम्परा
संग्रह – A.N. – 18.85.2 , 'द मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम, न्यूयार्क

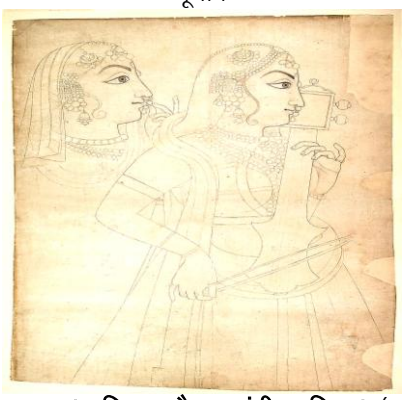

चित्र संख्या 6 'गायिका और सारंगी वादिका' (1800 ई.)
आकार – 66 X 46.4 सेमी.
माध्यम – कागज पर स्याही
संग्रह – द मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम, न्यूयार्क

चित्र संख्या 7 'महाराजा सवाई प्रताप सिंह के दो व्यक्तिचित्र' (1790 ई.)
आकार – 72.3 X 58.7 सेमी.
माध्यम – कागज पर स्याही
संग्रह – A.N. – LI 118.43, जमील स्टडी सेन्टर, द एश्मोलियन म्यूजियम ऑक्सफोर्ड

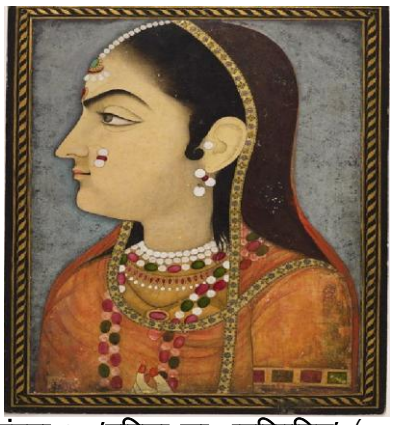

चित्र संख्या 8 'महिला का व्यक्तिचित्र' (1800 ई.)
आकार – 29.2 X 20.8 सेमी.
माध्यम – कागज पर खनिज एवं स्वर्ण रंग
संग्रह – A.N. – EA 1967.162, जमील स्टडी सेन्टर, द एश्मोलियन म्यूजियम ऑक्सफोर्ड

चित्र संख्या 9 'महाराजा सवाई प्रताप सिंह शाही हरम की महिलाओं के साथ' (1780–1800 ई.)
आकार – 46.4 X 44.5 सेमी.
माध्यम – कागज पर टेम्परा के साथ रजत व स्वर्ण रंग
संग्रह – A.N. –51997.70, फ्रियर गैलरी ऑफ आर्ट, वाशिंगटन, डी.सी.

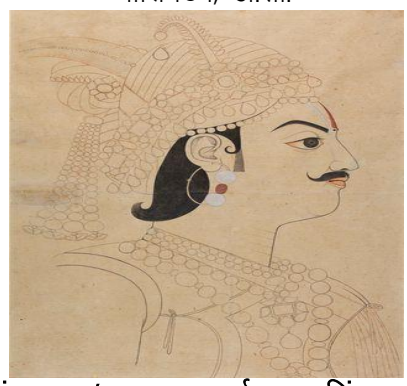

चित्र संख्या 10 'महाराजा सवाई प्रताप सिंह का आवक्ष व्यक्तिचित्र' (1800 ई.)
आकार – 28.5 X 20.5 सेमी
माध्यम – कागज पर स्याही व खनिज रंग
संग्रह – A.N. – 17.2934, म्यूजियम ऑफ फाईन आर्ट, बोस्टन